म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

सा विद्या या विमुक्तये

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

TESS India

भाषा और साक्षरता

भाषा-समृद्ध कक्षाकक्ष

भारत में विद्यालय समर्थित
शिक्षक शिक्षा

www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

The Open University

UKaid from the British people

एस.आर.मोहन्ती
अपर मुख्य सचिव

अ.शा.पत्र क्र R.S.K/10
दूरभाष कार्यालय - 0755-4251330
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग
मंत्रालय, वल्लभ भवन, भोपाल-462 004
भोपाल, दिनांक 20-1-2016

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

बच्चों की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण और रोचक बनाने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग निरन्तर प्रयासरत् है। आप सभी के प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण कौशल में भी निखार आया है और शालाओं में कक्षा शिक्षण भी आंनददायी तथा बेहतर हुआ है।

इसी दिशा में शिक्षकों को बाल केन्द्रित शिक्षण की ओर उन्मुख करने और शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को लेकर, TESS India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) का विकास किया गया हैं। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता व सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। आशा है कि ये संसाधन, शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन और क्षमतावर्द्धन में लाभकारी और उपयोगी सिद्ध होंगे।

राज्य शिक्षा केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में TESS India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया गया हैं। आशा है इन संसाधनों के उपयोग से प्रदेश के शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षक लाभान्वित होंगे और कक्षाओं में पठन पाठन को रूचिकर और गुणवत्तायुक्त बनाने में मदद मिलेगी।
शुभकामनाओं सहित,

(एस.आर.मोहन्ती)

दीप्ति गौड मुकर्जी
आयुक्त
राज्य शिक्षा केन्द्र एवं
सचिव
मध्यप्रदेश शासन
स्कूल शिक्षा विभाग

अर्द्ध शा. पत्र क्र. : 8
दिनांक : 12-1-16
पुस्तक भवन, वी-विंग
अरेरा हिल्स, भोपाल-462011
फोन : (का.) 2768392
फैक्स : (0755) 2552363
वेवसाइट : www.educationportal.mp.gov.in
ई-मेल : rskcommmp@nic.in

संदेश

प्रिय शिक्षक साथियों,

सभी बच्चों को रूचिकर और बाल केन्द्रित शिक्षा उपलब्ध हो इसके लिए आवश्यक है कि हमारे शिक्षकों को शिक्षण की नवीनतम तकनीकों और शिक्षण विधियों से परिचित कराया जाए साथ ही इन तकनीकों के उपयोग के लिए उन्हे प्रोत्साहित भी किया जाए। TESS India द्वारा तैयार किये गये मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) के उपयोग से शिक्षक शिक्षण प्रविधि के व्यावहारिक उपयोग को सीख सकते हैं। इनकी सहायता से शिक्षक न केवल विषय वस्तु को सुगमता पूर्वक पढ़ा सकते हैं बल्कि पठन पाठन की इस प्रकिया में बच्चों की अधिक से अधिक सहभागिता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

राज्य शिक्षा केन्द्र स्कूल शिक्षा विभाग ने स्थानीय भाषा में तैयार किये गये इन मुक्त शैक्षिक संसाधनों (Open Educational Resources) को अपने पोर्टल www.educationportal.mp.gov.in पर भी उपलब्ध कराया है।

आशा हैं, कि आप इन संसाधनों का कक्षा शिक्षण के दौरान नियमित रूप से उपयोग करेंगे और अपने शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हुए बच्चों की पढ़ाई को आनंददायक बनाने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

(दीप्ति गौड़ मुकर्जी)

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

टेस–इण्डिया स्थानीयकृत ओईआर निर्माण में सहयोग

मार्गदर्शन एवं समीक्षा :
श्रीमती स्वाति मीणा नायक, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एच. के. सेनापति, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. ओ.पी.शर्मा, अपर संचालक, मध्यप्रदेश एससीईआरटी
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
प्रो.जयदीप मंडल, विभागाध्यक्ष विज्ञान एवं गणित शिक्षा संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आर. रायजादा, सहप्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विस्तार शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. वी.जी. जाधव, से.नि. प्राध्यापक भौतिक, एनसीईआरटी
डॉ. के. बी. सुब्रमण्यम से.नि. प्राध्यापक गणित, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. आई. पी. अग्रवाल से.नि. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. अश्विनी गर्ग सहा. प्राध्यापक गणित संकाय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. एल. के. तिवारी, सहप्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री एल.एस.चौहान, सहा. प्राध्यापक विज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. श्रुति त्रिपाठी, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. रजनी थपलियाल, व्याख्याता अंग्रेजी, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. मधु जैन, व्याख्याता शास. उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल
डॉ. सुशोवन बनिक, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. सौरभ कुमार मिश्रा, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
श्री. अजी थॉमस, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
डॉ. राजीव कुमार जैन, सहा. प्राध्यापक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
स्थानीयकरण :
भाषा एवं साक्षरता
डॉ. लोकेश खरे, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एम.एल. उपाध्याय से.नि. व्याख्याता शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय मुरैना
श्री रामगोपाल रायकवार ,कनि. व्याख्याता, डाइट कुण्डेश्वर, टीकमगढ़
डॉ. दीपक जैन अध्यापक, शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय क्र 1 टीकमगढ़
अंग्रेजी
श्री राजेन्द्र कुमार पाण्डेय, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्रीमती कमलेश शर्मा. डायरेक्टर , ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री हेमंत शर्मा, प्राचार्य, ईएलटीआई, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री मनोज कुमार गुहा वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी. मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. एफ.एस.खान, वरि.व्याख्याता, प्रगत शैक्षिक अध्ययन संस्थान (आईएएसई) भोपाल
श्री सुदीप दास, प्राचार्य, शास.उ.मा.विद्यालय दालौदा, मन्दसौर
श्रीमती संगीता सक्सेना, व्याख्याता, ,शास.कस्तूरबा कन्या उ.मा.विद्यालय भोपाल
गणित
श्री बी.बी. पी. गुप्ता, समन्वयक गणित, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ए. एच. खान प्राचार्य शास.उ.मा.विद्यालय रामाकोना, छिंदवाड़ा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गुप्त , प्राचार्य शास. जीवाजी ऑब्जर्वेटरी उज्जैन
डॉ.आर,सी. उपाध्याय, वरि. व्याख्याता, डाइट, सतना
डॉ. सीमा जैन, व्याख्याता, शास. कन्या उ.मा.विद्यालय गोविन्दपुरा, भोपाल
श्री सुशील कुमार शर्मा, शिक्षक, शास. लक्ष्मी मंडी उ.मा.विद्यालय, अशोका गार्डन, भोपाल
विज्ञान
डॉ. अशोक कुमार पारीक उपसंचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
डॉ. सुसम्मा जॉनसन, व्याख्याता एस.आई.एस.ई. जबलपुर मध्यप्रदेश
डॉ.सुबोध सक्सैना, समन्वयक एससीईआरटी मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्री आर. पी. त्रिपाठी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री अरूण भार्गव, वरि. व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल
श्रीमती सुषमा भट्ट, वरि.व्याख्याता, एससीईआरटी, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
श्री ब्रजेश सक्सेना, प्राचार्य, एससीईआरटी ,मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल
डॉ. रेहाना सिद्दकी से.नि. व्याख्याता सेन्ट फ्रांसिस हा. से. स्कूल भोपाल

*TESS-India (*विद्यालय समर्थित शिक्षक शिक्षा*)* का उद्देश्य मुक्त शैक्षिक संसाधनों की सहायता से भारत में प्रारंभिक और सेकेण्डरी शिक्षकों के कक्षा अभ्यास व कक्षा निष्पादन को सुधारना है जिसमें वे इन संसाधनों की सहायता से विद्यार्थी-केंद्रित, सहभागी दृष्टिकोणों का विकास कर सकें। टेस इंडिया के मुक्त शैक्षिक संसाधन शिक्षकों के लिए स्कूल पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त,सहयोगी पुस्तिका या संसाधन की तरह हैं। इसमें शिक्षकों के लिए कुछ गतिविधियां दी गई हैं जिन्हे वे कक्षाओ में विद्यार्थियों के साथ प्रयोग में ला सकते हैं, इसके साथ साथ कुछ केस स्टडी दी गई हैं जो यह बताती हैं कि कैसे अन्य शिक्षकों ने पाठ्य विषय को कक्षाओं में पढ़ाया और अपनी विषय संबंधी जानकारियों को बढ़ाने तथा पाठ योजनाओं को तैयार करने में संसाधनों का उपयोग किया।

TESS-India OER भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार किये गये है और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट रूप में उपयोग के लिए उपलब्ध हैं *(http://www.tess-india.edu.in)*। *OER* कार्यक्रम से जुड़े प्रत्येक भारतीय राज्य के शिक्षकों के उपयोग के लिए उपयुक्त तथा कई संस्करणों में उपलब्ध हैं तथा शिक्षक व उपयोगकर्ता इन्हे अपनी स्थानीय आवश्यकताओं और सन्दर्भो के अनुरूप इनका स्थानीय करण करके उपयोग कर सकते हैं।

प्रस्तुत संस्करण मध्यप्रदेश की स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भो को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई में कुछ गतिविधियों के साथ यह आइकॉन (संकेत) दिया गया है*:* *.* इसका अर्थ है कि आप उक्त विशिष्ट विषयवस्तु या शैक्षणिक प्रविधि को और अधिक समझने के लिए *TESS-India* के वीडियो संसाधनों की मदद ले सकते हैं।

TESS-India वीडियो ससांधन (Resources) भारतीय परिप्रेक्ष्य में कक्षाओं में उपयोग की जा सकने वाली सीखने–सिखाने की विविध तकनीकों को दर्शाते हैं। हमें यकीन है कि इनसे आपको इसी प्रकार की तकनीकें अपनी कक्षा में करने में मदद मिलेगी। यदि इन वीडियो संसाधनों तक आपकी पहुँच नहीं हो तो कोई बात नहीं। यह वीडियो पाठ्यपुस्तक का स्थान नहीं लेते, बल्कि उसको पढ़ाने में आपकी मदद करते हैं।

TESS-India के वीडियो संसाधनों को *TESS-India* की वेबसाइट *http://www.tess-india.edu.in/* पर ऑनलाइन देखा जा सकता है या डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त आप इन वीडियो को सीडी या मेमोरी कार्ड में लेकर भी देख सकते हैं।

संस्करण *2.0 LL02v1*
Madhya Pradesh

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है: http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

इस इकाई में आप एक कल्पनाशील, भाषा-समृद्ध कक्षाकक्ष बनाने के सरल एवं प्रभावी तरीकों के बारे में जानेंगे, ताकि स्कूली परिवेश में स्वाभाविक बातचीत और लेखन के अलग अलग स्वरूपों के साथ आपके विद्यार्थियों का संपर्क बढ़ सके।

आपका परिचय ऐसे तरीकों से करवाया जाएगा, जिनके द्वारा आप स्कूल के बाहर के मौखिक व लिखित संसाधनों से अपने विद्यार्थियों को परिचित करा सकते हैं, अपनी कक्षाकक्ष की दीवारों पर पाठ्य सामग्री का उपयोग कर सकते हैं और आपको ऐसे क्रियात्मक, किफायती सुझाव भी दिए जाएंगे, जिनके द्वारा आप अपने विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए एक आनंददायक कोना तैयार कर सकते हैं।

इस इकाई से आप क्या सीख सकते है

- आकर्षक लेखन-आधारित कक्षाकक्ष की दीवारें कैसे बनाएँ।
- अपने विद्यार्थियों के लिए एक पढ़ने का कोना कैसे तैयार करें ?
- कक्षाकक्ष में बोलने की भाषा के स्रोत के रूप में रेडियो का उपयोग कैसे करें ?

यह तरीका क्यों महत्वपूर्ण है

पारंपरिक कक्षाओं में, शिक्षक ही मौखिक भाषा के मुख्य स्रोत होते हैं और पाठ्यपुस्तकें लिखित भाषा के मुख्य स्रोत होती हैं। समय की कमी और सीमित संसाधन इन विकल्पों में वृद्धि को हतोत्साहित करते हैं।

विद्यार्थियों की भाषा और साक्षरता के विकास के लिए उनके बोलने और लिखने के विभिन्न स्वाभाविक स्रोतों के संपर्क और उपयोग से अत्यधिक लाभ होता है। आपने विद्यार्थियों की जानकारी को मौखिक और लिखित संवाद के विभिन्न सार्थक उदाहरणों द्वारा समृद्ध बनाकर उनकी कल्पनाशीलता को प्रोत्साहन देंगे और साथ ही कई तरह के विषयों के बारे में शब्दों और वाक्यांशों की उनकी समझ और लेखन/पठन क्षमता भी बढ़ाएंगे। यदि आप अपने विद्यार्थियों की घर की भाषा के उदाहरणों को कक्षा में शामिल करते हैं, तो आप यह प्रदर्शित करेंगे कि उनके अतिरिक्त भाषाई कौशलों को महत्व दिया जाता है और इससे उनके सहपाठियों को उनसे अलग अलग संस्कृतियों और परंपराओं से जुड़ने का अवसर मिलेगा। इस प्रकार एक भाषा-समृद्ध कक्षा बनाने से आपके सभी छात्रों की शिक्षा पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इस इकाई में ऐसे कई तरीके सुझाए गए हैं, जिनके द्वारा आप अपनी कक्षा को अधिक भाषा-समृद्ध बनाने की शुरुआत कर सकते हैं।

1 स्थानीय परिवेश में लेखन के उदाहरण

स्कूल आने से बहुत पहले से ही विद्यार्थियों का परिचय लिखित भाषा के कई उदाहरणों के साथ हो जाता है - जैसे गाड़ियों पर, दुकानों के बोर्ड पर, सड़क की दिशाओं के बोर्ड पर, खाद्य पदार्थों के लेबल, विज्ञापन, पोस्टर, ब्रांड नाम, राजनैतिक नारे और दीवारों पर बने चित्र, पत्रकों में, किताबों में, अखबारों में और पत्रिकाओं में। निम्नलिखित गतिविधि में कक्षा में एक सरल पठन और चर्चा गतिविधि के आधार के रूप में स्थानीय परिवेश से लेखन के परिचित स्वरूपों के उदाहरण इकट्ठा करना शामिल है। यह ख़ास तौर पर छोटी उम्र के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है।

चित्र **1** स्थानीय परिवेश में लेखन के उदाहरण दर्शाती सड़क

गतिविधि 1: अपने कक्षाकक्ष में परिवेशीय लेखन का उपयोग करना

अपने स्थानीय परिवेश में ऐसे लेखनों की एक सूची बनाएँ, जिनसे शायद आपके विद्यार्थी परिचित हैं या जिन्हें वे रोचक मानते हैं। घरों में, कार्यस्थल की आपकी यात्रा में, और स्कूल के मैदानों में इसके उदारहण खोजे। आपने जो शब्द या वाक्यांश एकत्र किए हैं, उन्हें कागज़ की पट्टियों पर बड़े अक्षरों में लिखें और मोड़कर रख दें।

सबसे पहले अपने विद्यार्थियों को समझाएँ कि आपने क्या इकट्ठा किया है। उनकी जोड़ियाँ बनाएँ और पट्टियाँ वितरित करें। आप अनियमित रूप से ऐसा कर सकते हैं, जिसके लिए आप विद्यार्थियों की जोड़ियों को डिब्बे से एक पट्टी उठाने को कह सकते हैं, या आप चयन के आधार पर रूप से ऐसा कर सकते हैं, जिसमें आप अपने विद्यार्थियों की क्षमता के अनुसार उन्हें पट्टियां आवंटित करेंगे।

विद्यार्थियों की जोड़ियों से उनकी पट्टियों को खोलने और ऊपर उठाकर रखने को कहें, ताकि उनके सहपाठी देख सकें और पढ़कर सुना सकें कि उस पर क्या लिखा हुआ है। हर मामले में, इस बात पर संक्षिप्त चर्चा करें कि यह लेखन कहाँ मिल सकता है। कुछ शब्दों और अभिव्यक्तियों के लिए आपकी तरफ से समझाने या आगे और जानकारी देने की आवश्यकता पड़ सकती है।

अपने प्रत्येक विद्यार्थी को एक खाली कागज़ दें और उनसे कहें कि अगले एक सप्ताह तक वे घर और स्कूल के रास्ते में, अपने घर में या अपने आस-पड़ोस में नए शब्दों या वाक्यांशों को खोजे। इनका उपयोग इसी तरह की किसी युग्म गतिविधि के लिए करें या उन्हें दीवार पर प्रदर्शित करें, ताकि अन्य विद्यार्थी उन्हें पढ़ सकें और उनके बारे में बात कर सकें।

अपने विद्यार्थियों से कक्षा में कोई भी मुद्रित सामग्री लाने को कहें, जो उन्हें उनके घर में या गाँव में मिल जाए, जिसका अब उपयोग नहीं किया जा रहा है और इससे एक दीवार प्रर्दशनी बनाएँ।

यदि आपके पास एक कैमरा और प्रिंटर उपलब्ध है, तो आप स्थानीय लेखन के उदाहरणों के नजदीक से चित्र ले सकते हैं और इनकी प्रतियाँ मुद्रित करके उनका वितरण या प्रदर्शन कर सकते हैं।

विचार कीजिए

- क्या आप इन गतिविधियों का उपयोग अपने विद्यार्थियों के मूल्यांकन के लिए कर सकते हैं?
- आप इस गतिविधि को अधिक योग्य विद्यार्थियो के अनुकूल कैसे बना सकते हैं?

2 कक्षाकक्ष में लेखन के उदाहरण

कक्षाकक्ष में आपके विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए लेखन के कई उदाहरण मौजूद हो सकते हैं। ऐसा लेखन भयामपट पर, सांकेतक पटल और सूचना पटल पर, चार्ट, पोस्टर और लेबलों पर, तथा आपके विद्यार्थियों के कार्य के प्रदर्शन में हो सकता है।

केस स्टडी 1: कक्षाकक्ष में लेखन से सीखना

इंदौर में कक्षा एक की शिक्षिका सुश्री श्रुति अपने विद्यार्थियों के लिए एक लेखन-समृद्ध कक्षाकक्ष बनाने के बारे में अपना तरीका समझाती हैं।

मैं जानती हूँ कि मेरे छोटे विद्यार्थियों को कक्षाकक्ष में सुनने और बोलने के कई मौकों की ज़रुरत है। हालांकि उनमें से ज्यादातर अभी पढ़ या लिख नहीं सकते, लेकिन मैं इस बात को समझती हूँ कि पाठ के अलग अलग उदाहरणों से उनका परिचय करवाना कितना महत्वपूर्ण है, चाहे वह हस्तलिखित पाठ हो या मुद्रित हो।

मेरे पास रंगीन पोस्टरों का एक संग्रह है, जिसमें वर्णमाला और शब्द चार्ट आदि हैं। इन्हें मैं दीवार पर बच्चों की नज़रों की सीध में रखती हूँ।

मैं हर बच्चे के नाम के लेबल बनाती हूँ, जिस पर मैं उन्हें चित्र बनाने को कहती हूँ। मैं इन चित्रों को दीवार पर हुक के साथ लगाती हूँ, जहाँ वे अपने कोट और बैग रखते हैं। मेरे पास मुड़े हुए कार्डबोर्ड के नाम कार्डों का भी एक सेट है, जिसे मैं वहाँ रखती हूँ, जहाँ मैं कुछ विशिष्ट गतिविधियों के लिए विद्यार्थियों को जोड़ियों में या छोटे समूहों में बिठाना चाहती हूँ। ये लेबल मेरे विद्यार्थियों के लिखे हुए नामों और उनके सहपाठियों के नामों को पहचानने में उनकी मदद करने के लिए उपयोगी हैं।

रंगीन कागज़ का उपयोग करके, मैं कक्षाकक्ष की अलग अलग विशेषताओं के लिए भी लेबल बनाती हूँ। इनमें 'दरवाज़ा', 'खिड़की', 'ब्लैकबोर्ड', 'आलमारी', 'टेबल', 'कुर्सी', 'डेस्क', और 'घड़ी' जैसे शब्द शामिल हैं।

मैं प्रत्येक वस्तु पर सही लेबल लगाने में अपने विद्यार्थियों की मदद माँगती हूँ। सबसे पहले मैं अक्षरों और मात्राओं पर ध्यान देते हुए ऊँची आवाज़ में शब्द पढ़कर सुनाती हूँ। फिर मेरे विद्यार्थी इशारा करते हैं कि वह लेबल कहाँ लगना चाहिए। कभी-कभी मेरे विद्यार्थी कक्षा की किसी अन्य वस्तु पर लेबल लगाने का सुझाव देते हैं। ऐसे में, मैं उनके सुझावों को लिखते समय अक्षरों के नाम बोलती हूँ।

कक्षाकक्ष के एक हिस्से में मैंने एक लेखन कोना बनाया है। यहाँ मैं उन नए शब्दों को लिखती हूँ, जिनसे मेरे विद्यार्थियों का उस सप्ताह के दौरान परिचय हुआ है। मैं अपने विद्याथियों को खुद भी ये शब्द लिखने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ।

चित्र **2** एक भाषा-समृद्ध कक्षाकक्ष का उदाहरण।

विचार कीजिए

- सुश्री श्रुति के विचार किस प्रकार उनके विद्यार्थियों की भाषा और साक्षरता के विकास में योगदान कर रहे हैं?
- आप उनके किन विचारों को अपनी कक्षा में लागू कर सकते हैं?

गतिविधि 2: एक लेखन.समृद्ध कक्षाकक्ष बनाना

15 मिनट का समय उन तरीकों पर ध्यान देने के लिए अलग रखें, जिनके द्वारा आपकी कक्षाकक्ष में तत्काल लेखन प्रदर्शित होता है:

- यह किस रूप में है?
- क्या यह आपके विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायी है? यह उनके शिक्षण में किस तरह योगदान करता है?
- इसे कितने अंतराल पर बदला जाता है?
- यदि इसमें आपके विद्यार्थियों का काम शामिल है, तो उसका चयन किस तरह किया जाता है।

अपने दो साथी शिक्षकों से बात करें। उनकी कक्षाकक्ष की दीवारों पर लेखन के कौन-से उदाहरण दिखाई देते हैं?

आप अपनी कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों का जो कार्य प्रदर्शित करते हैं, उसकी सीमा में आप वृद्धि और बदलाव किस तरह कर सकते हैं? आप अपने विद्यार्थियों के लिए रोचक, आयु के उपयुक्त पठन सामग्रियाँ देने के लिए अपने खुद के लेखन का किस प्रकार कल्पनाशीलता से उपयोग कर सकते हैं? अपनी कक्षाकक्ष की दीवारों के उपलब्ध स्थान की एक योजना बनाएँ और सोचें कि आप अधिक प्रभावी रूप से इसका उपयोग कैसे कर सकते हैं। अपने आप से यह संकल्प करें कि यदि संभव हो, तो आप हर पंद्रह दिनों में अपनी कक्षाकक्ष में नए प्रदर्शन जोड़ेंगे या मौजूदा प्रदर्शन में से कुछ को बदलेंगे। अपने सहकर्मियों को भी ऐसा करने का प्रोत्साहन दें। नियमित रूप से एक दूसरे की कक्षाओं में जाकर एक दूसरे के दीवार प्रदर्शनों को देखें और उनसे सीखें।

3 कक्षाकक्ष का पढ़ने का कोना

अपनी कक्षाकक्ष में एक रीडिंग कॉर्नर(पढ़ने का कोना) बनाने से आपके विद्यार्थियों को एक ख़ास जगह मिलती है, जहाँ वे अपनी किताबें रख सकते हैं और इस सामग्री को स्वतंत्र रूप से देख सकते हैं।

कक्षा के रीडिंग कॉर्नर को बनाने और भरने में विद्यार्थियों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। इस तरह वे भी इसका उपयोग और इसमें सुधार करना चाहेंगे।

चित्र **3** कक्षाकक्ष का पढ़ने का कोना।

केस स्टडी 2: कक्षा का पठन कोना भरना

श्री दिलीप मध्य प्रदेश में एक प्राथमिक शाला में कक्षा तीन को पढ़ाते हैं। यहाँ वे बता रहे हैं कि उन्होंने किस तरह अपनी कक्षाकक्ष *के रीडिंग कॉर्नर के लिए कुछ किताबें इकट्ठी कीं।*

मैं जानता हूँ कि छोटी उम्र से ही किताबों का उपयोग करने का मौका मिलना विद्यार्थियों के लिए कितना महत्वपूर्ण होता है। हालांकि मेरे विद्यार्थियों को अपनी पाठ्यपुस्तकें पढ़ने में भी मज़ा आता था, लेकिन मैं चाहता था कि उन्हें देखने और पढ़ने के लिए और भी सामग्री मिले। हालांकि नई पुस्तकें खरीदने के लिए बहुत ही कम राशि उपलब्ध थी।

मेरे जिन रिश्तेदारों और दोस्तों के बच्चे बड़ी उम्र के थे, सबसे पहले मैंने उनसे पूछा कि क्या उनके घरों में कोई ऐसी किताब है, जिसकी अब उनके बच्चों को ज़रुरत नहीं है। मैं शिक्षा के लिए दान देने वाली जिन संस्थाओं के बारे में जानता था, मैंने उन्हें पत्र लिखकर पूछा कि क्या वे किसी तरह इसमें योगदान कर सकते हैं। अंत में मैंने कुछ पुस्तकें खरीदने के लिए अपने वार्षिक शाला निधि का उपयोग किया।

मैंने केवल दस पुस्तकों के साथ अपने रीडिंग कॉर्नर की शुरुआत की थी। दो वर्षों में ही मैंने कथाओं और कथेतर साहित्य की लगभग 60 पुस्तकों का कलेक्शन बना लिया, जो विभिन्न स्तरों के लिए उपयुक्त थीं। मेरे पास कई तरह की पत्रिकाएँ और अखबार भी हैं। मैं अब स्कूल के अन्य शिक्षकों को भी ये देता हूँ।

गतिविधि 3: अपनी कक्षाकक्ष में एक पढ़ने का कोना शामिल करना
यदि संभव हो, तो एक साथी शिक्षक के साथ काम करके, अपनी कक्षाकक्ष में एक रीडिंग कॉर्नर के लिए योजना बनाएँ और आपके मन में आने वाले सभी विचारों को लिख लें। निम्नलिखित पर विचार करें:

- आपके पास उपयुक्त पुस्तकें और पढ़ने की सामग्री प्राप्त करने के कौन-से साधन उपलब्ध हैं?
- आपके विद्यार्थी किस तरह सामग्री की आपूर्ति में योगदान कर सकते हैं (उदहारण के लिए, खुद ही पुस्तकें तैयार करके)?
- आप अपनी कक्षाकक्ष में रीडिंग कॉर्नर कहाँ बना सकते हैं?
- इसे सेट करने के लिए आपको किन चीजों की आवश्यकता है (उदाहरण के लिए किताबें रखने के लिए बक्से, बैठने के लिए दरी आदि)? आप इन चीजों को कहाँ रख सकते हैं?
- आप अपनी कक्षाकक्ष की गतिविधियों में रीडिंग कॉर्नर का उपयोग किस तरह शामिल करेंगे?

संसाधन 1 में कुछ उपयोगी विचार दिए गए हैं, जो अपनी कक्षाकक्ष में रीडिंग कॉर्नर तैयार करने में आपकी मदद करते हैं।

4 कक्षाकक्ष के एक संसाधन के रूप में रेडियो

केस स्टडी 3: भाषा और साक्षरता के विकास के लिए रेडियो का उपयोग करना

श्रीमती रेखा मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले के एक प्राथमिक विद्यालय में पदस्थ है जहाँ बहुकक्षा शिक्षण हैं। यहाँ वे बता रही हैं कि अपने भाषा पाठों में वे किस तरह एक संसाधन के रूप में रेडियो का उपयोग करती हैं।

मेरे विद्यालय में पाठ्यपुस्तकों के अलावा बहुत ही कम संसाधन उपलब्ध हैं। मैं अपने खाली समय में अक्सर रेडियो सुनती हूँ और मुझे पता चला है कि इसमें कई रोचक कार्यक्रम आते हैं। अब मैं नियमित रूप से रेडियो का उपयोग अपने छात्रों के भाषा पाठों को परिणामदायी बनाने हेतु अतिरिक्त स्रोत के रूप में उपयोग करती हूँ। मुझे यह अच्छा लगता है कि किस तरह इससे मैं अपनी कक्षाकक्ष की बाहर की दुनिया से उनका परिचय करवा सकती हूँ।

मैं अखबार की रेडियो कार्यक्रम सूचना का उपयोग करके उपयुक्त कार्यक्रमों की पहचान उनमें शामिल विषयों के आधार पर करती हूँ। मैं कक्षाकक्ष में कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण सुनाना चाहती थी, इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि इनका समय उपयुक्त हो, लेकिन अब मेरे पास रिकॉर्डिंग सुविधा वाला एक रेडियो है, इसलिए मैं पहले से ही उन्हें चुन सकती हूँ और बाद में चला सकती हूँ।

अक्सर मैं अपने विद्यार्थियों को खासतौर पर तैयार किए गए शिक्षाप्रद कार्यक्रम सुनाती हूँ, क्योंकि ये स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं और इनमें बूझने के लिए एक या दो संक्षिप्त कार्य अथवा अन्य गतिविधियाँ होती हैं। कार्यक्रमों के बाद हम हमेशा उनकी सामग्री के बारे में बात करने में समय बिताते हैं। यदि कोई बात समझ नहीं आई थी, तो इससे उसे समझने में मदद मिलती है। कभी-कभी पूरी कक्षा इसमें एक साथ भाग लेती है। कभी-कभी मैं अपने विद्यार्थियों के समूह बनाती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे साथ बैठकर कार्यक्रम के बारे में चर्चा करें। मैं अक्सर इन चर्चाओं के बाद अपने छोटे विद्यार्थियों को कार्यक्रम की सामग्री के बारे में संक्षेप में कुछ लिखने को कहती हूँ और अपने बड़े विद्यार्थियों को एक लंबी रिपोर्ट तैयार करने को कहती हूँ।

मैं कक्षाकक्ष में कहानियों, नाटकों और धारावाहिकों को भी सुनाती हूँ। इसके बाद उनके पात्रों, उनमें उठाए गए मुद्दों, या आगे क्या होगा, इस बारे में चर्चा होने लगती है। कभी कभी मैं अपने विद्यार्थियों को आमंत्रित करती हूँ कि वे अपने शब्दों में इसके संवाद लिखें और भूमिका अदा करें।

मुझे यह अच्छा लगता है कि किस तरह रेडियो कार्यक्रम अलग अलग आवाजों, नई अभिव्यक्तियों और भाषा के अलग अलग अभ्यासों से मेरे विद्यार्थियों का परिचय करवाते हैं। कार्यक्रमों के दौरान यदि कोई अपरिचित लगने वाले शब्द आते हैं, तो मैं उन्हें लिख लेती हूँ और बाद में अपने विद्यार्थियों से पूछती हूँ कि क्या उन्हें वे शब्द मालूम हैं या क्या वे उनका अर्थ बता सकते हैं। कभी कभी वे सुनी गई भाषा पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं कि प्रस्तुतकर्ता ने एक शब्द का उच्चारण इस लहजे में किया या अमुक शब्द अथवा अभिव्यक्ति का उपयोग किया, जबकि इसके बजाय एक वैकल्पिक शब्द का उपयोग किया जा सकता था। इन अंतरों पर चर्चा करने से भाषा की समृद्धि और विविधता के बारे में उनकी जागरुकता बढ़ाने में मदद मिलती है।

मैंने अपने विद्यार्थियों की स्थानीय भाषा में भी कार्यक्रम के एक छोटे अनुभाग के प्रसारण का प्रयोग किया है। जो विद्यार्थी इसे समझ सकते थे, उनसे मैंने कहा कि वे अपने सहपाठियों को बताएँ कि वक्ता ने क्या कहा है। इसके बाद मैंने उनसे वक्ता द्वारा उपयोग किए गए दो या तीन मुख्य शब्दों को दोहराने को कहा और बाकी कक्षा को मौखिक रूप से उन्हें दोहराने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने अपने परिचित शब्द अपनी स्थानीय भाषा में बोर्ड पर लिखे और शेष कक्षा ने अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं में उनकी नकल की। हर कोई इस पाठ में पूरी तरह खोया हुआ था।

मेरे विद्यार्थियों के लिए रेडियो प्रसारण का उपयोग करने से उन्हें हर समय मेरी ही आवाज़ सुनते रहने के बजाय एक पूरक विकल्प मिलता है।

विचार कीजिए

- श्रीमती रेखा के रेडियो-आधारित पाठ उनके विद्यार्थियों को भाषा और साक्षरता के विकास के कौन-से अवसर देते हैं?
- क्या आपको लगता है कि कक्षाकक्ष में रेडियो का उपयोग करने में चुनौतियां हो सकती हैं? आप उनसे कैसे निपट सकते हैं?

मुख्य संसाधन सभी की सहभागिता में इस बारे में अधिक विचार हैं कि कक्षा में किस तरह विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाई जा सकती है, उदाहरण के लिए उनके घर की भाषा को महत्व देकर।

वीडियो: सभी की सहभागिता –

गतिविधि 4: कक्षाकक्ष में रेडियो का उपयोग करना

कक्षाकक्ष में रेडियो कार्यक्रमों का उपयोग करने से पहले भाषा और साक्षरता के विकास में उनके उपयोग का अभ्यास करना उपयोगी होता है।

चित्र **4** कक्षाकक्ष में रेडियो सुनना।

लगभग एक सप्ताह की अवधि में, ऐसे दो या तीन रेडियो कार्यक्रम सुनने का समय निकालें, जो अपने लिए आपको ठीक लगते हों। इन्हें सुनते समय इस बारे में सोचें कि आप निम्नलिखित सन्दर्भ में इनके प्रसारण से आपके विद्यार्थियों को क्या लाभ होगा।

- इसकी सामग्री के विविध पक्ष
- उनकी भाषा और साक्षरता का विकास।

इसके बाद, कल्पना करें कि आप कक्षाकक्ष में हैं और ऊँची आवाज़ में बोलकर उस तरह के प्रश्नों और चर्चा के बिन्दुओं का अभ्यास करें, जिन्हें शायद आप प्रसारण के बाद अपने विद्यार्थियो से करेगें और ऐसा करते समय विषय का उनका ज्ञान और उनके भाषा व साक्षरता स्तरों पर विचार करें।

ऐसी एक या दो गतिविधियाँ रेखांकित करें, जो आपके विद्यार्थी प्रसारण के बाद प्रस्तुत कर सकते हैं। इनमें बोलना या लिखना अथवा दोनों का मिश्रण शामिल हो सकता है। इस बारे में सोचें कि आप अपने विद्यार्थियों की बैठक व्यवस्था किस प्रकार करेंगे, इसमें उन्हें कितना समय लगेगा और आप किस तरह अंत में कक्षा को एक साथ लाएँगे।

जब आप इस कौशल को कई बार दोहरा लें, तो एक कार्यक्रम चुनें, जिसको सुनाया जा सकता हो, या जिसे रिकॉर्ड करके बाद में कभी आपकें विद्यार्थियों के लिए फिर से चलाया जा सकता हो। जितना संभव हो, इन पाठों की योजना पहले से ही बनाएँ। इसके बाद इसे आज़मा कर देखें।

विचार कीजिए

- क्या पाठ आपकी उम्मीद के अनुसार हुआ?
- अगली बार आप अलग ढंग से क्या करेंगे?

एक भाषा-समृद्ध कक्षाकक्ष बनाने के बारे में आगे के विचारों के लिए, संसाधन 2 'स्थानीय संसाधनों का उपयोग करना' को देखें।

वीडियो: स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए

सारांश

इस इकाई में आपको कुछ सरल और उपयोगी तरीके बताए गए, जिनके द्वारा आप अपनी कक्षाकक्ष को अधिक भाषा-समृद्ध बना सकते हैं। इसमें ऐसे विचारों का सुझाव दिया गया, जिनका उपयोग आप कक्षाकक्ष में यह सुनिश्चित करने के लिए कर सकते हैं कि बोलने और लिखने के कई प्रकार के अलग अलग स्रोतों से आपके विद्यार्थियों का परिचय होता है। इनमें लेखन-आधारित दीवार प्रदर्शन बनाने, आपके विद्यार्थियों के लिए एक लेखन कोना तैयार करने और कक्षा में रेडियो का उपयोग करने के सुझाव शामिल हैं। समय के साथ-साथ आप ऐसे सरल संसाधनों और गतिविधियों का सेट बना सकते हैं, जिनका उपयोग विभिन्न स्तरों वाले विद्यार्थियों के साथ पाठ्यपुस्तक के पाठों में वृद्धि करने और अपने परिवेश में वे जिस लेखन और बोलने के संपर्क में आते हैं, उनसे जुड़ने की प्रेरणा में वृद्धि के लिए कर सकते हैं।

संसाधन

संसाधन 1: अपने कक्षाकक्ष में एक आकर्षक रीडिंग कॉर्नर बनाना

स्कूल की पाठ्यपुस्तकों की पूरक बन सकने वाली पठन सामग्रियों को खोजना कठिन हो सकता है, लेकिन आपको जितनी हो सके, उतनी सामग्री जुटाने का प्रयास कारना चाहिए जिन्हें आपके विद्यार्थी पढ़ना चाहते हैं। यहाँ ऐसे चार शिक्षकों से प्राप्त विचार दिए गए हैं, जो अपने स्कूल में पुस्तक क्षेत्र और पुस्तकलयों का विकास करते रहे हैं:

- रंगीन पत्रिकाओं से विद्याथ्रियों के पढ़ने योग्य सामग्री काटें और उन्हें पुस्तकों या चार्ट पर चिपकाएँ।
  भासन द्वारा प्रदाय बरखा ग्रेडेड सीरिज का उपयोग करें।
- पुस्तकालय हेतु प्रदाय की गई राशि से क्रय की गई पुस्तकों का उपयोग करें।
- राजाराम मोहन राय पुस्तकालय स्कीम के अंतर्गत प्रदाय पुस्तकों का उपयोग करें।
- विभिन्न NGO स्वयं सेवी संगठनो से संपर्क करें और दान में किताबें माँगें।
- जहाँ उपयुक्त हो, वहाँ अभिभावकों, समुदाय के सदस्यों या स्कूल आने वाले मेहमानों से पुस्तकें और पत्रिकाएँ दान में मांगें।

अब इस बारे में सोचें कि आप किस तरह एक प्रेरणादायक पढ़ने का वातावरण तैयार कर सकते हैं। यहाँ आपके लिए लिए कुछ शुरूआती विचार दिए गए हैं:

पढ़ने योग्य सामग्री एकत्र करना

यथा संभव अधिकाधिक पठन सामग्री इकट्ठा करें, ताकि आपका संग्रह धीरे-धीरे बदलता और बढ़ता रहे। सुनिश्चित करें कि आपका संग्रह पठन क्षमता के विभिन्न स्तरों को आकर्षित करता हो। उपलब्ध पुस्तकों में विभिन्न तरह के विषय शामिल करें, जैसे:

- कहानियों की किताबें
- खेल, प्रकृति, वस्तुएँ बनाने आदि के बारे में तथ्यात्मक पुस्तकें।
- शब्दकोश और एटलस
- कविताएँ
- चुटकुलों और पहेलियों की किताबें
- यदि संभव हो, तो आपके छात्रों की घर की भाषाओं (स्थानीय भाशाओं) में पुस्तकें।

अपने संग्रह में जोड़ने के लिए अख़बार, पत्रिकाएँ और चित्र कथाएँ इकट्ठा करें। आपके विद्यार्थियों को अपने समुदायों से उपयुक्त पठन सामग्रियाँ भेजने के लिए प्रेरित करें।

पुस्तकें निर्माण करना–

आपके विद्यार्थी उनकी खुद की कविताओं या लघुकथाओं वाली पुस्तक बना सकते हैं। वे कोई लघुकथा लिख सकते हैं या कोई पाठ जिस विषय पर केंद्रित था, उसके बारे में कोई पुस्तक विकसित कर सकते हैं। वे अपनी पुस्तक के लिए एक कवर भी डिज़ाइन कर सकते हैं, ताकि वह दूसरों को पुस्तक पढ़ने के लिए आकर्षित करे।

विशेष प्रदर्शन

किसी विषय वस्तु , उदाहरण के लिए पानी या परिवहन, पर आधारित सामग्री प्रदर्शित करने से जिज्ञासा और चर्चा को प्रोत्साहन मिलता है और यह विद्यार्थियों को प्रेरित करने का एक अच्छा तरीका है कि वे स्वयं जानकारी हासिल करें। पुस्तक प्रदर्शनों के साथ साथ पोस्टर, चित्र और फोटो भी दीवार पर लगाए जा सकते हैं। विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए, नियमित रूप से दीवार प्रदर्शनी को बदलते रहने की कोशिश करें और इनमें ऐसी सामग्रियाँ शामिल करें, जो उन्होंने खुद तैयार की हों।

आपके पास जो पढ़ने योग्य सामग्री उपलब्ध हैं, यदि आप उनके बारे में अच्छी तरह जानते हैं, तो आप अपने अपने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करके उन्हें यह बता सकते हैं कि इनमें से कौन-सी सामग्रियों में उन्हें उनकी जिज्ञासाओं के उत्तर मिलेंगे।

एक पढ़ने योग्य कोना बनाना

अपनी कक्षा या स्कूल में एक पठन क्षेत्र या कोना बनाने के लिए स्थान की पहचान करें। यहाँ एक बड़ा संकेत पटल लगाएँ, ताकि इसका उद्देश्य स्पष्ट हो सके। आपके विद्यार्थियों के पढ़ने के लिए एक आकर्षक और आरामदायक स्थान बनाएँ। एक चटाई बिछाएँ या संभव हो तो कुर्सियां रखें।

पता करें कि क्या इकट्ठा की गई पठन सामग्री की देखभाल करने और इनका रिकॉर्ड रखने के लिए कोई छात्र लाइब्रेरियन(पुस्तकालय प्रभारी) के रूप में मदद करना चाहते हैं। पठन सामग्री चाहे दराजों में रखी हों या बक्सों में, लेकिन यह सुनिश्चित करें कि वे हर दिन प्रदर्शित की जाएं, ताकि विद्यार्थी उन तक आसानी से पहुँच सकें। नियमित रूप से अलग अलग विद्यार्थियों को उन्हें बाहर निकालने और ठीक ढंग से रखने के काम के लिए आमंत्रित करें। विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें कि वे खराब हो जाने या फट जाने वाली किताबों की मरम्मत करने में आपकी मदद करें। आपके विद्यार्थियों की सहभागिता जितनी ज्यादा होगी, वे इस स्थान की और पढ़ने के इसके काम की उतनी ही ज्यादा ज़िम्मेदारी लेंगे।

संसाधन 2: स्थानीय संसाधनों का उपयोग करते हुए–

अध्यापन के लिए केवल पाठ्यपुस्तकों का ही नहीं – बल्कि अनेक शिक्षण संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है। यदि आप विभिन्न ज्ञानेंद्रियों (दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, गंध, स्वाद) का उपयोग करने वाले तरीकों को अपनाते हैं, तो आप विद्यार्थियों के सीखने के विभिन्न तरीकों को आकर्षित करेंगे। आपके इर्दगिर्द ऐसे संसाधन उपलब्ध हैं जिनका उपयोग आप कक्षा में कर सकते हैं, और जिनसे आपके विद्यार्थियों की शिक्षण-प्रक्रिया को समर्थन मिल सकता है। कोई भी स्कूल शून्य या जरा सी लागत से अपने स्वयं के शिक्षण संसाधनों को उत्पन्न कर सकता है। इन सामग्रियों को स्थानीय ढंग से प्राप्त करके, पाठ्यक्रम और आपके विद्यार्थियों के जीवन के बीच संबंध बनाए जाते हैं।

आपको अपने नजदीकी एवं आस–पास में ऐसे लोग मिलेंगे जो विविध प्रकार के विषयों में पारंगत हैं; आपको कई प्रकार के प्राकृतिक संसाधन भी मिलेंगे। इससे आपको स्थानीय समुदाय के साथ संबंध जोड़ने, उसके महत्व को प्रदर्शित करने, विद्यार्थियों को उनके पर्यावरण की प्रचुरता और विविधता को देखने के लिए प्रोत्साहित करने, और संभवतः सबसे महत्वपूर्ण रूप से, विद्यार्थियों के शिक्षण में समग्र दृष्टिकोण – यानी, स्कूल के भीतर और बाहर सीखने को अपनाने की ओर काम करने में सहायता मिल सकती है।

अपनी कक्षाकक्ष का अधिकाधिक लाभ उठाना–

लोग अपने घरों को यथासंभव आकर्षक बनाने के लिए कठिन मेहनत करते हैं। उस वातावरण के बारे में सोचना भी महत्वपूर्ण है जहाँ आप अपने विद्यार्थियों को शिक्षित/सीखने की अपेक्षा करते हैं। आपकी कक्षा और स्कूल को पढ़ाई की एक आकर्षक जगह बनाने के लिए आप जो कुछ भी कर सकते हैं उसका आपके विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव होगा। अपनी कक्षा को रोचक और आकर्षक बनाने के लिए आप बहुत कुछ कर सकते हैं – उदाहरण के लिए, आप:

- पुरानी पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं से पोस्टर बना सकते हैं
- वर्तमान विषय से संबंधित वस्तुएं और शिल्पकृतियाँ ला सकते हैं
- अपने विद्यार्थियों के काम को प्रदर्शित कर सकते हैं
  विद्यार्थियों को उत्सुक बनाए रखने और नई शिक्षण-प्रक्रिया को प्रेरित करने के लिए कक्षा में प्रदर्शित चीजों को बदलें।

अपनी कक्षाकक्ष में स्थानीय विशेषज्ञों का उपयोग करना

यदि आप गणित में पैसे या परिमाणो माप पर काम कर रहे हैं, तो आप बाज़ार के व्यापारियों या दर्जियों को कक्षा में आमंत्रित कर सकते हैं और उन्हें यह समझाने को कह सकते हैं कि वे अपने काम में गणित का उपयोग कैसे करते हैं। वैकल्पिक रूप से, यदि आप कला विषय के अंतर्गत परिपाटियों और आकारों जैसे विषय पर काम कर रहे हैं, तो आप मेहंदी डिजाइनरों को स्कूल में बुला सकते हैं ताकि वे भिन्न-भिन्न आकारों, डिजाइनों, परम्पराओं और तकनीकों को समझा सकें। अतिथियों को आमंत्रित करना तब सबसे उपयोगी होता है जब शैक्षणिक लक्ष्यों के साथ संबंध हर एक व्यक्ति को स्पष्ट होता है और सामयिकता की साझा अपेक्षाएं मौजूद होती हैं।

आपके पास स्कूल समुदाय में विशेषज्ञ उपलब्ध हो सकते हैं जैसे (रसोइया या देखभालकर्ता) जिन्हें विद्यार्थियों द्वारा अपने शिक्षण के संबंध में प्रतिबिंबित किया जा सकता है अथवा वे उनके साथ साक्षात्कार कर सकते हैं; उदाहरण के लिए, पकाने में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री की मात्रा का पता लगाने के लिए, या स्कूल के मैदान या भवनों पर मौसम संबंधी स्थितियों का कैसे प्रभाव पड़ता है।

बाह्य वातावरण का उपयोग करना

आपकी कक्षा के बाहर ऐसे अनेक संसाधन उपलब्ध हैं, जिनका प्रयोग आप अपने पाठों में कर सकते हैं। आप पत्तों, पौधों, कीटों, पत्थरों या लकड़ी जैसी वस्तुओं को एकत्रित कर सकते हैं (या अपने विद्यार्थियों से एकत्रित करने को कह सकते हैं)। इन संसाधनों को अंदर लाने से कक्षा में रूचिकर प्रदर्शन तैयार किए जा सकते हैं जिनका संदर्भ पाठों में किया जा सकता है। इनसे चर्चा या प्रयोग आदि करने के लिए वस्तुएं प्राप्त हो सकती हैं जैसे वर्गीकरण से संबंधित गतिविधि, या सजीव या निर्जीव वस्तुएं। बस की समय सारणियों या विज्ञापनों जैसे संसाधन भी आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं जो आपके स्थानीय समुदाय के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं – इन शब्दों को पहचानने, गुणों की तुलना करने या यात्रा के समयों की गणना करने के कार्य निर्धारित करके शिक्षा के संसाधनों में बदला जा सकता है।

कक्षा में बाहर से वस्तुएं लाई जा सकती हैं- लेकिन बाहरी स्थान भी आपकी कक्षा का विस्तार हो सकते हैं। आम तौर पर सभी विद्यार्थियों के लिए चलने-फिरने और अधिक आसानी से देखने के लिए बाहर अधिक जगह होती है। जब आप सीखने के लिए अपनी कक्षा को बाहर ले जाते हैं, तो वे निम्नलिखित गतिविधियो को कर सकते हैं:

- दूरियों का अनुमान करना और उन्हें मापना
- यह दर्शाना वृत के घेरे (परिधि) पर हर बिन्दु केन्द्रीय बिन्दु से समान दूरी पर होता है
- दिन के भिन्न समयों पर परछाइयों की लंबाई रिकार्ड करना
- संकेतों और निर्देशों को पढ़ना
- साक्षात्कार और सर्वेक्षण आयोजित करना
- सौर पैनलों की खोज करना
- फसल की वृद्धि और वर्षा की निगरानी करना।

बाहर, उनका शिक्षण वास्तविकताओं तथा उनके स्वयं के अनुभवों पर आधारित होता है, तथा शायद अन्य संदर्भों में अधिक लागू हो सकता है।

यदि आपके बाहर के काम में स्कूल के परिसर को छोड़ना शामिल हो तो, जाने से पहले आपको स्कूल के प्रधानाध्यापक की अनुमति लेनी चाहिए, समय सारणी बनानी चाहिए, सुरक्षा की जाँच करनी चाहिए और विद्यार्थियों को नियम स्पष्ट करने चाहिए। इससे पहले कि आप बाहर जाएं, आपको और आपके विद्यार्थियों को यह बात स्पष्ट रूप से पता होनी चाहिए कि किस संबंध में जानकारी प्राप्त की जाएगी।

संसाधनों का उपयोग करना

चाहें तो आप मौजूदा संसाधनों को अपने विद्यार्थियों के लिए कहीं अधिक उपयुक्त बनाने हेतु उन्हें उपयोग कर सकते हैं। ये परिवर्तन छोटे से हो सकते हैं किंतु बड़ा अंतर ला सकते हैं, विशेष तौर पर यदि आप शिक्षण को कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक बनाने का प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आप स्थान और लोगों के नाम बदल सकते हैं यदि वे दूसरे राज्य से संबंधित है, या गाने में व्यक्ति के लिंग को बदल सकते हैं, या कहानी में शारीरिक रूप से अक्षम बच्चे को शामिल कर सकते हैं। इस तरह से आप संसाधनों को अधिक समावेशी और अपनी कक्षा और उनकी शिक्षण-प्रक्रिया के उपयुक्त बना सकते हैं।

साधन संपन्न होने के लिए अपने सहकर्मियों के साथ काम करें; संसाधनों को विकसित करने और उन्है अनुकूलित करने के लिए आपके बीच ही आपको कई कुशल व्यक्ति मिल जाएंगे। एक सहकर्मी के पास संगीत, जबकि दूसरे के पास कठपुतलियाँ बनाने या कक्षा के बाहर के विज्ञान को नियोजित करने के कौशल हो सकते हैं। आप अपनी कक्षा में जिन संसाधनों को उपयोग करते हैं उन्हें अपने सहकर्मियों के साथ साझा कर सकते हैं ताकि अपने स्कूल के सभी क्षेत्रों में एक प्रचुर शिक्षण वातावरण बनाने में आप सबकी सहायता हो सके।

अतिरिक्त संसाधन

- NCERT's Department of Education in Languages (look under 'Activities' and 'Publications', in particular): http://www.ncert.nic.in/departments/nie/del/index_dl.html
- Room to Read, India: http://www.roomtoread.org/india
- TeachingEnglish Radio India: http://www.britishcouncil.in/teach/teachingenglish-radio-india

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Austin, R. (ed.) (2009) *Letting the Outside In*. London: Trentham Books.

Bridges, L. (1995) *Creating Your Classroom Community*. Portland, ME: Stenhouse Publishers.

Department for Education and Skills (2006) *Learning Outside the Classroom: Manifesto*. London: DfES Publications. Available from: http://www.lotc.org.uk/wp-content/uploads/2011/03/G1.-LOtC-Manifesto.pdf (accessed 28 October 2014).

Gregory, M. (undated) 'Creating a classroom library' (online), Reading Rockets. Available from : http://www.readingrockets.org/article/creating-classroom-library (accessed 28 October 2014).

National Curriculum Framework 2005 – A Study Guide (2006) 'Position papers by focus: NCF 2005' (online). Available from: http://ncf2005.blogspot.co.uk/2009/07/position-papers-by-focus-groups-ncf.html (accessed 28 October 2014).

Webster, L. and Reed, S. (2012) *The Creative Classroom*. London: Collins.

अभिस्वीकृतियाँ

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/)। नीचे दी गई सामग्री मालिकाना हक की है तथा इस परियोजना के लिए लाइसेंस के अंतर्गत ही उपयोग की गई है, तथा इसका Creative Commons लाइसेंस से कोई वास्ता नहीं है। इसका अर्थ यह है कि इस सामग्री का उपयोग अननुकूलित रूप से केवल TESS-India परियोजना के भीतर किया जा सकता है और किसी भी बाद के OER संस्करणों में नहीं। इसमें TESS-India, OU और UKAID लोगो का उपयोग भी शामिल है।

इस यूनिट में सामग्री को पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति के लिए निम्न स्रोतों का कृतज्ञतापूर्ण आभार:

चित्र 1: http://www.scillytoday.com/2012/08/09/islanders-return-from-doe-trip-to-india/india-street-scene/ (Figure 1: http://www.scillytoday.com/2012/08/09/islanders-return-from-doe-trip-to-india/india-street-scene/)

चित्र 4: https://www.flickr.com/photos/jordibernabeu/15155376815/ (Figure 4: https://www.flickr.com/photos/jordibernabeu/15155376815/)

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन अध्यापक शिक्षकों, मुख्याध्यापकों, अध्यापकों और छात्रों के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।